RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 33 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 28 अक्टूबर, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये

दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 33, 25–28 अक्टूबर 2018 तदनुसार 12 कार्तिक, सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

क्या कहूँ और क्या सोचूँ

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

वि मे कर्णा पतयतो वि चक्षुर्वी३ दं ज्योतिर्हृदय आहितं यत्।
वि मे मनश्चरति दूरआधीः किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये।।
–ऋ० ६।९।६

शब्दार्थ–मे = मेरे **कर्णा** = कान **वि+पतयतः** = विविध दिशाओं में गिरा रहे हैं, भगा रहे हैं। **चक्षुः** = मेरी आँख भी **वि** = विविध रूपों में मुझे गिरा रही हैं। इनके कारण **इदं+ज्योतिः** = यह ज्योति भी, **यत्** = जो **हृदये** = हृदय में **आहितम्** = निहित है **वि** = विविध वासनाओं में दौड़ रही है। **मे** = मेरा **मन** = मन दूरे–दूर के **आधीः** = विचारों में **विचरति** = विचर रहा है **किं+स्वित्** = क्या **वक्ष्यामि** = मैं कहूँ और **किम्+उ+नु** = क्या तो मैं **मनिष्ये** = मनन करूँ।

व्याख्या–कितनी करुण पुकार है! भगवान् ने आत्मज्योति के साक्षात्कार का आदेश दिया। जीव समझा, यह भी कोई इन्द्रियगोचर पदार्थ है, अतः इन्द्रियों से उसे देखने का, जानने का प्रयत्न करने लगा, किन्तु उसे पता लगा कि इन्द्रियाँ मेरे बस में हैं ही नहीं। कानों को कहा–कहीं से आत्माराम की बात सुनना तो बताना कान चले, किन्तु मार्ग में बाजा सुनाई पड़ा, कान वहीं रुक गये। वापस न आये। आँख को भेजा, तुम जाओ, तुम आत्मा को देखो, खोजो। रूप की प्यासी आँख के सामने नयनाभिराम दृश्य आया। आँख सर्वात्मना उसके देखने में तन्मय हो गई। इसी भाँति अन्य इन्द्रियों ने कार्य किया। यहीं तक बात होती तो कदाचित् सहन कर ली जाती, किन्तु ये तो जब कहीं गई, आत्मज्योति को भी साथ लेती गई।

वीदं ज्योतिर्हृदय आहितं यत् = यह हृदय के भीतर रहने वाली ज्योति–आत्मज्योति भी इन्द्रियों के साथ विविध विषयों में गिर रही है। शास्त्र कहते हैं–**आत्मा जिज्ञासते, अनन्तरं मनसा संयुज्यते, मनः इन्द्रियेण, इन्द्रियमर्थेन, ततो ज्ञानोद्भवः।** आत्मा पहले जानने की इच्छा करता है, तब मन से संयुक्त होता है, मन इन्द्रियों से, इन्द्रिय पदार्थ से, तब ज्ञान होता है। जब आत्मा ही इधर–उधर भाग रहा है, तब उसके साथ करण–अन्तःकरण–अन्तरङ्ग साधन–बनकर मन कहाँ ठहर सकता है? अतः कहा है–**'वि मे मनश्चरति दूर आधीः'** = मेरा मन भी दूर–दूर के विचारों में विचर रहा है, अर्थात् इन्द्रियों के विषयों के चक्कर में पड़कर आत्मा अपना लक्ष्य खो बैठा है, अतः रोता हुआ कहता है–**'किं स्विद्वक्ष्यामि किमु नू मनिष्ये'** = क्या कहूँ और क्या विचारूँ। आत्मा ने अपनी भूल से सेवकों को स्वामी बना दिया है। इसी से दुर्दशाग्रस्त हो रहा है। यह उलटी अवस्था पाप को पैदा करने वाली है। जैसा कि अथर्ववेद [५।१८।२] में कहा है–**'अक्षद्रुग्धो राजन्यः पाप आत्मपराजितः'** = इन्द्रियों के विद्रोह से आत्मपराजय होता है और वही पाप है। आत्मा को पुनः स्वामी बना दो, राजा बना दो। इन्द्रियों का द्रोह दब जाएगा और पाप भी नष्ट हो जाएगा। **(स्वाध्याय संदोह से साभार)**

त्वमग्ने प्रथमो अङ्गिरा ऋषिर्देवो देवानामभवः शिवः सखा।
तव व्रते कवयो विद्मनापसोऽजायन्त मरुतो भ्राजदृष्टयः।।
–यजु० ३४.१२

भावार्थ–हे प्रकाशस्वरूप ज्ञानप्रद प्रभो! आप सबसे प्रथम प्रसिद्ध, जीव के सुखदाता, महाज्ञानी, विद्वान् महात्माओं के कल्याण कारक और सच्चे मित्र हैं। जो महापुरुष मेधावी उज्ज्वल बुद्धि वाले, आपके बनाए नियमों के अनुसार अपना जीवन बनाते हैं, वे ही आपकी आज्ञा मानते हुए सदा सुखी होते हैं।

कया नश्चित्र आ भुवदूती सदावृधः सखा।
कया शचिष्ठया वृता।।
–यजु० ३६.४

भावार्थ–सदा से महान् वह जगदीश्वर आश्चर्यस्वरूप और आश्चर्यकारक है। वह आनन्ददायक रक्षण से और अपनी आनन्दकारक महाशक्ति द्वारा, हम सबकी रक्षा करता हुआ, हमारा सच्चा मित्र बना रहता है। ऐसे सदा सुखदायक सच्चे मित्र परमात्मा की, शुद्ध मन से भक्ति करना हमारा सबका कर्तव्य है।

कस्त्वा सत्यो मदानां मꣳहिष्ठो मत्सदन्धसः।
दृढा चिदारुजे वसु।।
–यजु० ३६.५

भावार्थ–हे मनुष्यो! वह सत्, चित् और आनन्दस्वरूप जगत्पिता परमात्मा, अन्नादि भोग और बलयुक्त धन, अनेक विपत्तियों को दूर करने के लिए तुम मनुष्यों को, देकर आनन्दित करते हैं, ऐसे दयालु परमपिता को कभी भूलना नहीं चाहिए।

अभी षु णः सखीनामविता जरितृणाम्।
शतं भवास्यूतिभिः।।
–यजु० ३६.६

भावार्थ–हे सबके रक्षक परम प्यारे जगदीश्वर! आप अपने मित्रों उपासकों का अनेक प्रकार से अत्युत्तम रक्षण करते हैं। भगवान्! न्यूनता हमारी ही है, जो हम संसार के भोगों में लम्पट होकर संसारी पुरुषों को अपना मित्र जानते और उनके ही सेवक और उपासक बने रहते हैं। इसमें अपराध हमारा ही है, जो हम आपके प्यारे मित्र और उपासक नहीं बनते।

हम भी दोषी हैं

ले०-इन्द्रजित्‌देव, चूना भट्टियाँ यमुनानगर

आर्य समाज गुरुडम का घोर विरोधी है परन्तु गुरुडम फूल फल रहा है। इसके दुष्परिणाम सबके सामने हैं। कुछ आर्यजन मुझसे नाराज होंगे, जब वे मेरे लेख में लिखी इस बात को पढ़ेंगे कि इस स्थिति के लिए आर्य समाज भी दोषी है। महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यों को आर्य समाज के आठवें नियम में यह आज्ञा दी है-''अविद्या का नाश और विद्या की वृद्धि करनी चाहिए।'' जिस तीव्रता से आर्य समाज अविद्या, असत्य, पाखण्ड तथा पोपलीलाओं का खण्डन पहले करता रहा है, उस प्रकार से अब नहीं करता। पहले हमारे सत्संगों की परम्परा थी कि प्रात: काल के सत्संग में आध्यात्मिक यथा पुनर्जन्म, कर्मफल, यज्ञ, वेद मन्त्रों की व्याख्या, ईश्वर भक्ति आदि विषयों पर ही उपदेशक अपने उपदेश दिया करते थे। दोपहर पश्चात्‌ के कार्यक्रम में गृहस्थ, सामाजिकता, राष्ट्र, शिक्षा, इतिहास व युवाशक्ति आदि विषय चर्चित होते थे जबकि रात्रिकालीन सभाओं में अवैदिक मतों की विचारधारा का डटकर खण्डन करके वेद मत की स्थापना की जाया करती थी। वेद सप्ताह व शास्त्रार्थों की भी बड़ी धूम मचती थी। इस विधि से अविद्या का नाश करने व विद्या की वृद्धि करने में अत्यन्त सहायता मिलती थी। आर्य समाज के उत्सव व सम्मेलन मन्दिरों से बाहर खुले मैदानों में होते थे जिनमें चलते-फिरते अनेक गैर आचार्य समाजी भी आकर विद्वानों को सुनते थे व सुनकर वैदिक विचारधारा को जानने व मानने लगते थे। नये लोग आर्य समाजी बनते थे व पुराने आर्य समाजियों के विचारों में जो थोड़ा ढीलापन आ जाता था, वह दूर होकर पुन: दृढ़ता आ जाती थी। अब बहुत कुछ बदल गया है। शास्त्रार्थ बन्द, शंका समाधान बन्द, ग़ैर आर्यों से सम्पर्क बन्द, खण्डन बन्द, जन सम्पर्क बन्द, सेवा प्रकल्प बन्द, आंदोलन बन्द! अब शेष जो बचता है, वह हम उन्हीं को सुनाते हैं, उन्हीं को दिखाते हैं, जो लोग पहले से जानते-मानते हैं। न नई पीढ़ी न आ रही है, न ही ग़ैर आर्य समाजी इसमें प्रवेश कर रहे हैं। वे कहाँ जा रहे हैं, यह जानना ही तो निष्पक्षत: दिखेगा कि वे नास्तिक बन रहे हैं, जगरातों में जा रहे हैं, बाबाओं के आश्रमों में जा रहे हैं, सिनेमघरों में जा बैठ रहे हैं, टी.वी. और मोबाईल के यहाँ उपस्थित हो रहे हैं या विधर्मी बन रहे हैं। सच्ची विद्या के अभाव के फलस्वरूप यदि साधारण जन अविद्या और अन्य विश्वासों का शिकार हो रहे हैं तो यह स्वाभाविक है। इसमें उनका दोष नहीं। अब हम गुरुडम पर अपनी चर्चा करते हैं। गुरुडम फैलाने वाले कथित गुरु कबीरदास का मुख्य आधार लेते हैं और इन 2 दोहों को प्रस्तुत करके स्वयं को ईश्वर में भी बड़ा सिद्ध करते हैं-

गुरु गोबिन्द दोऊ खड़े काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपके जिन गोबिन्द दियो मिलाय।।
कबीरा वे नर मूढ़ हैं जो गुरु को कहते और।
हरि रूठे गुरु और है गुरु रूठे नहीं ठौर।।

ऐसे दोहे सुन-सुनकर अपठित, स्वल्पपठित ही नहीं, अधिक पठित जन भी कथित गुरुओं के शिष्य बनने में गर्व अनुभव करने लगते हैं। एक 'गुरुमन्त्र' लेकर उसे ही रटते हैं। यह 'गुरुमन्त्र' किसी दूसरे व्यक्ति को बताया-सुनाया तो इसका लाभ नष्ट हो जाएगा, यह भी 'गुरु' उन्हें कहता है। बाबा राम रहीम का स्वनिर्मित अपने शिष्यों को जो 'मन्त्र' रटने के लिए दिया जाता था, वह यह है-'सत्पुरख अकाल मूरत शब्द रूपी राम।' इसे बनाने व प्रचारित करने वाले बाबा को यह पता ही नहीं है कि मन्त्र केवल वेद में ही होते हैं। शेष जो भी कुछ हैं, वे श्लोक, दोहे, सूत्र, चौपाई, गीत, गज़ल, रूबाई या मुक्तक तो हैं, मन्त्र नहीं हो सकते। उक्त 'मन्त्र' में विशेष कुछ भी नहीं है। इसके रटने भर से व्यक्ति के दु:ख-दर्द भी नहीं दूर हो सकते। यह 'मन्त्र' दूसरे व्यक्ति को सुनाने-बताने भर से यदि निष्फल हो जाएगा तो यह कमज़ोर 'मन्त्र' है। इसी प्रकार अन्य वर्तमान गुरु अपने अपने बनाए कथित 'मन्त्रों' का हाल है।

कबीर दास का जन्म एक विधवा के यहाँ हुआ था व लोकलाज के कारण उसकी माँ उसे गंगा के घाट पर काशी में रखकर चली गई थी। आचार्य रामानन्द ने शिशु को उठाया था व कुछ सिखाया था। कबीर के निजी जीवन में गुरु का अधिक महत्व था, यह समझ में आता है परन्तु कबीर ऋषि नहीं था कि उसकी प्रत्येक बात सच मानी जानी चाहिए। उसके पूर्वोक्त दो दोहों को आधार बनाकर जो लोग गुरु को ईश्वर से भी बड़ा मानते हैं, उनका ध्यान हम कबीरदास के निम्नलिखित दोहे की ओर दिलाते हुए पूछते हैं कि कबीर ने तो इस दोहे में यह लिखा है कि गुरु को शिष्य से कुछ नहीं लेना चाहिए। फिर उनके गुरु अपने शिष्यों में तन, मन और धन सब कुछ क्यों लेते हैं-

शिष्य को ऐसा चाहिए गुरु को सब कुछ देय।
गुरु को ऐसा चाहिए शिष्य से कछु न लेय।।

कबीरदास के दोहे 'बलिहारी गुरु आपके जिन गोबिन्द दियो मिलाय' को अपना आदर्श मानकर शिष्यों को इसको अपनाने का उपदेश देने वाले कथित गुरुओं से हम पूछते हैं कि कबीर ने यह भी तो लिखा है-'शिष्य से कछु न लेय।' इसे क्यों नहीं मानते ?

आर्य समाज गुरु प्रथा का विरोधी नहीं परन्तु जब हमें बाज़ार में जाकर एक घड़ा भी लेना होता है तो उसकी जाँच-परख करके ही लेते हैं परन्तु गुरु की परख किए बिना किसी एक आत्मश्लाघी व्यक्ति को गुरु क्यों मान लेते हैं ? नौवीं कक्षा तक पढ़ा राम रहीम लाखों शिष्यों का गुरु अपने-आप नहीं बना। उसे उन लोगों ने धन दिया जो उसे मोक्षदाता मान बैठे। जिन्होंने उसकी परख नहीं की। यह नहीं जाना कि इसमें वितैषणा, लोकैषणा पुत्रैषणा का अथाह सागर उपस्थित है। जिसके डेरे पर एक मिर्च भी एक हजार रु. में शिष्य ख़रीदते थे, वह डेरा 'सच्चा सौदा' कैसे माना ज़ा सकता है ? जो धन-धन को सत्गुरु घोषित करता था तथा उसी के आसरे को बड़ा आसरा मानता था, उसकी एषणाओं को अन्ध-भक्त नहीं समझ पाए तो इसमें राम रहीम का दोष कितना है ? साधारण जन सत्य की परख करना नहीं चाहता। उसे तुरन्त सिद्धि व सफलता अपेक्षित है। आस्था वा श्रद्धा के नाम पर वह सब कुछ लुटाने को तैयार है। एक महिला की यह घटना पढ़कर हम भी मान बैठे हैं कि सामान्य जन का शोषण करना कठिन नहीं है। वह घटना इस प्रकार है-एक महिला एक कथित गुरु की शिष्या बनी तथा उस बाबा के डेरे पर गुरु की सेवा करने जाने लगी। एक बार उसका पति रुग्ण हो गया तथा उसे सेवा की आवश्यकता थी परन्तु वह स्त्री यह कहकर एक सप्ताह के लिए डेरे पर चली गई कि पति की सेवा करने से तो केवल यह लोक ही सुधरेगा, बाबा की सेवा करने से तो परलोक भी सुधरेगा। पीछे बीमार पति की मृत्यु हो गई। ऐसे अनेक घटनाएं हो रही हैं किन्तु फिर भी हमारे समाज के अधकचरे दिमाग के अनेक स्त्री-पुरुष समझ नहीं रहे, मान नहीं रहे। आदि शंकराचार्य ने अपनी पुस्तक 'प्रश्नोत्तरी' में गुरु की परिभाषा यह लिखी है-

गुकारस्त्वन्धकारः स्यात्‌ रेफतस्य विवर्तकः।
अज्ञाननिवर्तकत्वात्‌ गुरुरित्य-भिधीयते।।

अर्थ: 'ग' नाम है अन्धकार का, अज्ञान का तथा जो अन्धकार-अज्ञान को हटाए तथा ज्ञान का, विद्या का प्रकाश फैलाए, वह गुरु है।

इसके विपरीत वर्तमान कथित गुरुओं का अन्त:करण तेज़ छुरे के समान होता है परन्तु वाणी बहुत मीठी होती है। वे उन अन्धे कुओं के सदृश होते हैं जो ऊपर से तो तिनकों से ढके होते हैं परन्तु मार्ग पर चलने वालों को धोखा देते हैं। वे लोभ का ही पाठ पढ़े होते हैं। अपनी बुद्धि की चतुराई से अपने मार्ग का ही बखान करते हैं तथा

(शेष पृष्ठ 7 पर)

सम्पादकीय

सभी आर्य समाजें महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस अवश्य मनाएं

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि 7 नवम्बर 2018 को दीपावली का पर्व आ रहा है। इसी दिन युग प्रवर्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने प्रभो तेरी इच्छा पूर्ण हो कहते हुए अपनी नश्वर देह का त्याग करके इहलोक से प्रयाण किया था। इसलिए आर्य जगत के लिए दीपावली का पर्व बहुत ही महत्वपूर्ण और प्रेरणादायक है। सभी आर्य समाजें इस दिवस को श्रद्धा के साथ मनाएं। असतो मा सदगमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय, मृत्योर्मामृतं गमय के सन्देश को धारण करते हुए महर्षि दयानन्द सरस्वती के सिद्धान्तों तथा वेदों का प्रचार-प्रसार करने का संकल्प लें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने सत्य के मार्ग पर चलते हुए हमेशा अज्ञानरूपी अन्धकार को दूर करने का प्रयास किया। अनेकों कष्ट सहन करने पड़े, कई बार जहर पीना पड़ा फिर भी वे सत्य और धर्म के मार्ग से विमुख नहीं हुए। इसलिए हम सभी आर्यजनों का कर्त्तव्य है कि दीपावली के पर्व पर लोगों को महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के कार्यों से अवगत कराएं। अपनी-अपनी आर्य समाजों में कार्यक्रमों का आयोजन करके इस दिन को धूमधाम के साथ मनाएं। क्योंकि महापुरूषों का देहावसान साधारण मनुष्यों की मृत्यु के समान शोकजनक नहीं होता अपितु उनका तो प्रादुर्भाव और महाप्रयाण दोनों ही लोककल्याण और आनन्द प्रदान करने के लिए होते हैं। वे परोपकार के लिए प्राणों को अर्पण करते हैं। संसार के सुख के लिए अपने प्राणों की बलि देते हैं। इसलिए जनता उनके बलिदान पर उनकी कीर्ति का कीर्तन और गुणगान करके एक प्रकार का आनन्द अनुभव करती है। उनका बलिदान स्वयं जनता के लिए परोपकारार्थ का उत्तम आदर्श स्थापित करके जनता को उसका अनुसरण करने के लिए प्रेरित करता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज की स्थापना करके समस्त मानव जाति का जो उपकार किया है, महर्षि के उस ऋण को नहीं चुकाया जा सकता। महर्षि दयानन्द ने धार्मिक क्षेत्र में पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अन्धविश्वास के ऊपर जमकर प्रहार किया। राजनैतिक क्षेत्र में उन्होंने स्वराज्य प्राप्ति पर जोर दिया। सत्यार्थ प्रकाश में महर्षि दयानन्द जी सरस्वती जी लिखते हैं कि अच्छे से अच्छा स्वदेशी राज्य बुरे से बुरे विदेशी राज्य की कल्पना भी नहीं कर सकता। सामाजिक क्षेत्र में उन्होंने नारी जाति के उद्धार,विधवाओं की दुर्दशा को सुधारने और बाल विवाह जैसी कुरीतियों को दूर करने पर बल दिया। इसलिए हमारा कर्त्तव्य बनता है कि हम भी महर्षि के ऋण से उऋण होने का प्रयास करें।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने आर्य समाज के नियम बनाते समय उन नियमों में ही आर्य समाज का उद्देश्य निर्धारित किया है। कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का उदघोष देते हुए उन्होंने सम्पूर्ण विश्व को आर्य बनाने का सन्देश दिया। उस उद्देश्य को पूरा करने के लिए संगठित होने की आवश्यकता है। उन्होंने अपने राष्ट्र का नहीं, आर्य समाज का नहीं अपितु संसार का उपकार करना आर्य समाज का मुख्य उद्देश्य बताया ताकि हम अपने उद्देश्य से भटक न जाएं। महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस पर हमारा लक्ष्य होना चाहिए कि हम लोगों को आर्य समाज के बारे में जानकारी दें। आर्य समाज के बारे में आम जनता में जो भ्रान्तियां फैल चुकी हैं, उन्हें दूर करने के लिए उन्हें आर्य समाज के सिद्धान्तों से अवगत कराएं। आर्य समाज की स्थापना के पीछे महर्षि दयानन्द जी का यही उद्देश्य था कि समाज में धर्म के नाम पर जो आडम्बर दिखाई दे रहा है, मूर्ति पूजा के कारण जो अन्धविश्वास फैल रहा है, सम्प्रदायवाद के कारण जो लड़ाई झगड़े हो रहे हैं, उन्हें दूर किया जा सके। सत्य सनातन वैदिक धर्म को अपनाकर सभी लोग संगठित होकर विदेशियों की दासता से मुक्त हों। महर्षि दयानन्द किसी नए पन्थ की मत की स्थापना नहीं करना चाहते थे। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी स्वमन्तव्यामन्तव्यप्रकाश में लिखते हैं कि- मैं अपना मन्तव्य उसी को मानता हूं जो तीन काल में सबको एक सा मानने योग्य है। मेरा कोई नवीन कल्पना वा मतमतान्तर चलाने का लेशमात्र भी अभिप्राय नहीं है किन्तु जो सत्य है उसको मानना, मनवाना और जो असत्य है उसको छोड़ना और छुड़वाना मुझ को अभीष्ट है। यदि मैं पक्षपात करता तो आर्य्यावर्त्त में प्रचारित मतों में से किसी एक मत का आग्रही होता किन्तु जो-जो आर्य्यावर्त्त वा अन्य देशों में अधर्मयुक्त चाल चलन है उस का स्वीकार और जो धर्मयुक्त बातें हैं उन का त्याग नहीं करता, न करना चाहता हूं क्योंकि ऐसा करना मनुष्य धर्म से बहिः है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी समाज को मत, पन्थ और सम्प्रदायों के जाल से मुक्त करना चाहते थे। इसीलिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करते हुए इस बात पर विशेष ध्यान दिया कि इससे कोई गुरूडमवाद न फैले। उन्होंने स्पष्ट कहा कि मेरे मरने के बाद मेरी कोई समाधि या स्मृति स्थल न बनाया जाए जिससे मूर्ति पूजा या पत्थर पूजा शुरू हो जाए। उन्होंने मरने के बाद अपनी राख को भी खेतों में डालने का निर्देश दिया।

महर्षि दयानन्द द्वारा स्थापित सार्वभौमिक नियमों के आधार पर ही विश्व शान्ति की कल्पना की जा सकती है। आर्य समाज के नियमों में लेषमात्र भी मत, पन्थ, सम्प्रदायवाद की भावना का समावेश नहीं है। उनका उद्देश्य सम्पूर्ण विश्व का कल्याण करना था। आज समाज में फैल रही बुराईयों का, साम्प्रदायिक भावनाओं का, हिंसा की भावनाओं का मूल कारण यही है कि लोग मत, पन्थ और सम्प्रदायों के जाल में जकड़े हुए हैं। एक सम्प्रदाय दूसरे सम्प्रदाय के प्रति द्वेष फैलाता है। परिणामस्वरूप समाज में अशान्ति देखने को मिलती है।

इसलिए ऐसी परिस्थितियों में आर्य समाज का उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। महर्षि दयानन्द का निर्वाण दिवस सम्पूर्ण आर्य जगत के लिए प्रेरणास्रोत है। ऐसे अवसरों पर कार्यक्रमों का आयोजन करने का उद्देश्य आर्य समाज की गतिविधियों का विस्तार करना होना चाहिए। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब से सम्बन्धित सभी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्था के अधिकारियों से निवेदन है कि वे महर्षि के निर्वाण दिवस को समारोहपूर्वक मनाएं। अपनी- अपनी आर्य समाजों एवं शिक्षण संस्थाओं में कार्यक्रम का आयोजन करके लोगों को वेदों के साथ जोड़ने का प्रयास करें। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित वैदिक साहित्य इस अवसर पर बाँटे। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब वेद प्रचार के कार्य को आगे बढ़ाने के उद्देश्य से ही वैदिक साहित्य आधे मूल्य पर देती है। वैदिक साहित्य को पढ़ने से ही वेदों का एवं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का प्रचार एवं प्रसार होगा। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब सदैव इस कार्य के लिए प्रयासरत है और वेद प्रचार के कार्य में आपका पूर्ण सहयोग करेगी। आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब ने हजारों की संख्या में बाल सत्यार्थ प्रकाश छपवा कर रखे हुए हैं ताकि जिसे बच्चों को बाँट कर वैदिक सिद्धान्तों का अंकुर पैदा किया जा सके। सभी शिक्षण संस्थाओं के अधिकारी प्रयास करें कि बच्चों को वैदिक सिद्धान्तों की जानकारी मिले। महर्षि दयानन्द निर्वाण दिवस पर हम उनके जीवन से शिक्षा लेकर वेद प्रचार के कार्यों को आगे बढ़ाएं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

यजुर्वेद में पुरुष सूक्त

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

यजुर्वेद अध्याय 31 में कुल 22 मन्त्र हैं। इन मन्त्रों में से कुछ मन्त्रों में तो परब्रह्म परमेश्वर के स्वरूप का वर्णन हुआ है तथा कुछ मन्त्रों में सृष्टि उत्पत्ति का क्रमिक वर्णन है। जब इन मन्त्रों का सरस्वर पाठ होता है तो वातावरण में एक समां सा बन जाता है। सभी श्रोता मन्त्रमुग्ध हो जाते हैं। सारी सृष्टि ठहर सी जाती है। परमेश्वर के स्वरूप और गुणों का कीर्तन मनुष्य के मन को मोह लेता है। इन मन्त्रों का अर्थ कोई जाने या न जाने परन्तु मन्त्रों के गाने के प्रभाव से अछूता नहीं रह पाता है। अब हम इन मन्त्रों के द्वारा परमात्मा तथा उसके द्वारा सृष्टि को कुछ जानने का प्रयत्न करते हैं। वेद की यह मान्यता है कि परमात्मा सृष्टि की रचना के साथ ही उसमें प्रवेश कर जाता है। परन्तु उस विराट् पुरूष के सामने यह सृष्टि इतनी लघु है कि उसका अधिकाँश भाग सृष्टि के बाहर ही रहता है। चूंकि वह सर्वव्यापक है अत: कोई भी प्राणी ऐसा नहीं है जिसमें ईश्वर नहीं है। इसलिए उपनिषदों में यह कहा गया है कि सम्पूर्ण सृष्टि उसका सतरूप हैं। सृष्टि के बाहर से उसका भाग 'त्यत्' कहलाता है। उस परमात्मा को केवल इस सृष्टि के द्वारा पूर्ण रूप से नहीं जाना जा सकता है। उसे उसके 'त्यत्' रूप से भी पूर्ण रूपेण नहीं जान सकते हैं। उसे जानने के लिए 'सत्' रूप सृष्टि और 'त्यत्' रूप सृष्टि के बाहर दोनों को जानना होता है। उपनिषद में कहा गया है कि सत् में 'स' और 'त्यत्' में से 'त्य' को मिलाकर ही तो 'सत्य' शब्द की सिद्धि होती है। आओं अब हम पुरूष सूक्त का अध्ययन कर सत्य को जानने का प्रयत्न करें।

सहस्त्रशीर्षा पुरूषः सहस्त्राक्षः सहस्त्रापात्।

स भूमिंऽसर्वत स्पृत्वाऽत्यतिष्ठद् दशाङ्-गुलम्।।1।।

पदार्थ-हे मनुष्य। जो (सहस्त्रशीर्षा) सब प्राणियों के हजारों सिर (सहस्त्राक्षः) हजारों नेत्र और (सहस्त्रपात्) असंख्य पैर वाला ऐसा (पुरूषः) सर्वत्र परिपूर्ण व्यापक परमेश्वर हैं। ऐसा इसलिए है कि वह सब प्राणियों में व्याप्त है। (सः) वह (सर्वत्र) सब जगह (भूमिम्) भूमि में (स्पृत्वा) सब ओर से व्याप्त होकर (दशाङ्गुलम) पांच स्थूल भूत और पांच सूक्ष्म भूत जिनसे प्राणी मात्र का शरीर बनता है। उस समस्त जगत् को (अति अतिष्ठत्) उल्लंघन कर स्थिर होता अर्थात् इन सबसे पृथक् भी होता है। वास्तव में यह सृष्टि उसका व्यक्त रूप है। सृष्टि का उपादान कारण तो प्रकृति है परन्तु इसका निमित्त कारण परमेश्वर है। वही प्रलय के अन्त में सत्व.रज.तम की साम्यावस्था में उसे गति देकर उसमें विकार उत्पन्न कर उससे सृष्टि की क्रमशः उत्पत्ति करता है। वेद इस विचार को बड़े सुन्दर ढंग से प्रकाशित करता है।

पुरूषऽएवेदंऽसर्वं यद्भूतं यच्च भाव्यम्।

उतामृतत्वस्येशानो यदन्नेनातिरोहति।।2।।

पदार्थ-(हे मनुष्यों) (यत्) जो (भूतम्) उत्पन्न हुआ (च) और (यत्) जो (भाव्यम्) उत्पन्न होने वाला (उत) और (यत्) जो (अन्नेन) अन्न आदि के द्वारा (अतिरोहति) अत्यन्त बढ़ता है उस (इदम्) इस प्रत्यक्ष परोक्ष रूप (सर्वम्) समस्त जगत् को (अमृतत्वस्य) अविनाशी मोक्ष रूप अथवा कारण का (ईशानः) अधिष्ठाता (पुरूषः) सत्य, गुण कर्म और स्वभाव से पूर्ण पर ब्रह्म परमात्मा (एव) ही रचयिता है।

यह सम्पूर्ण दृष्ट और अदृष्ट सृष्टि परमात्मा के महत्व को बताने वाली है। व्यक्त और अव्यक्त सृष्टि ही उसका लिङ्ग है। यह सम्पूर्ण चराचर जितना जगत् है। वह सब परमात्मा के एक चतुर्थ अंश में ही रहता है।

एतावानस्य महिमातो ज्यायाँश्च पुरूषः।

पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्यामृतं दिवि।।3।।

पदार्थ-(हे पुरूषों) (अस्य) इस पर ब्रह्म परमेश्वर का (एतावान्) यह दृश्य अदृश्य ब्रह्माण्ड (महिमा) महत्व सूचक है। (अतः) इस ब्रह्माण्ड से यह (पुरूषः) पूर्ण परमात्मा (ज्यायान्) अति प्रशंसित और बड़ा है। (च) और (अस्य) इस ईश्वर के (विश्वा) सब (भूतानि) पृथ्वी आदि चराचर जगत् एक (पादः) अंश है और (अस्य) इस जगत् सृष्टा का (त्रिपाद्) तीन अंश (अमृतम्) नाश रहित महिमा (दिवि) द्योतनात्मक अपने स्वरूप में है। जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि सृष्टि तो उसका एक छोटा सा सूचना देने वाला 'सत' भाग है, उसका तीन चौथाई भाग तो बाहर है।

त्रिपादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोस्येहाभवत्पुनः।

ततो विष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि।।4।।

पदार्थ-पूर्वोक्त (त्रिपात्) तीन अंशों वाला (पुरूषः) पालक परमेश्वर (ऊर्ध्वः) सर्वोत्तम मुक्ति स्वरूप संसार से पृथक् (उत् ऐतु) उदय को प्राप्त होता है। वास्तव में सृष्टि को उत्पन्न करने पर ही उसका भी ज्ञान होता है, विद्वान् लोग व्यक्त सृष्टि से उसके उत्पन्न करने वाले पर ब्रह्म को जानने का प्रयत्न करते हैं। (अस्य) इस पुरूष का (पादः) एक भाग (इहः) इस जगत् में पुनः बार बार उत्पत्ति प्रलय के चक्र से (अभवत्) होता है। (तत्) इसके उपरान्त (साशनानशने) खाने वाले चेतन और न खाने वाले जड़ इन दोनों के (अभि) प्रति (विष्वङ्) सर्वत्र प्राप्त होता हुआ (वि अक्रामत) विशेष रूप से व्याप्त होता है।

ततो विराडऽजायत विराजोऽअधिपूरूषः।

सजातोऽअत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः।।5।।

पदार्थ-(हे मनुष्यों) (तत्) उस पूर्ण परमात्मा से (विराट्) विराट् ब्रह्माण्ड रूप संसार (अजायत) उत्पन्न होता है। (विराट्) विराट् संसार के (अधि) ऊपर अधिष्ठाता (पुरूषः) परिपूर्ण परमात्मा होता है। (अथो) इसके अनन्तर (सः) वह पुरूषः (पुरः) पहिले से (जातः) प्रसिद्ध हुआ (अति अरिच्यत्) जगत् से अतिरिक्त होता है। इसलिए उसे शेष या उच्छिष्ट भी कहा जाता है। (पश्चात्) इसके पीछे (भूमिम्) पृथ्वी को उत्पन्न करता है। यहाँ ध्यान दें कि पृथ्वी सृष्टि के उत्पन्न होने के प्रारम्भ से बहुत देर बाद उत्पन्न होती है।

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतः सम्भृतं पृषदाज्यम्।

पशुंस्याँश्चक्रे वायव्यानारण्या ग्राम्याश्च ये।।6।।

पदार्थ-(तस्मात्) उस परमात्मा से (सर्वहुतः) जो सब से ग्रहण किया जाता उस (यज्ञात्) पूजनीय पुरूष परमात्मा से सब (पृषदाज्यम्) दध्यादि भोगने योग्य वस्तु (सम्भृतम्) सम्यक सिद्ध उत्पन्न हुआ। (ये) जो (आरण्याः) वन के सिंह आदि (च) और (ग्राम्या) ग्राम में रहने वाले गौ, अश्व आदि पशु है, (तान्) उन (वायव्यान्) वायु के तुल्य गुण वाले (पशून्) पशुओ को जो (चक्रे) उत्पन्न करता है उसको हम जाने। फिर इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए कहा गया है-

तस्माद्यज्ञात्सर्वहुतऽऋचः सामानि जज्ञिरे।

छन्दाऽसि जज्ञिरे तस्माद्यजुस्तस्मा दजायत्।।7।।

पदार्थ-जब पशुओं की उत्पत्ति के अनन्तर मनुष्य उत्पन्न हो गये तब (तस्मात्) उस पूर्ण (यज्ञात्) अत्यन्त पूज्य (सर्वहुतः) जिसके लिए सब लोग समस्त पदार्थो को देते व समर्पण करते उस परमात्मा से (ऋचः) ऋग्वेद (सामानि) सामवेद (जज्ञिरे) उत्पन्न होतें हैं। (तस्मात्) उस पुरूष से ही (छन्दांसि) अथर्ववेद (जज्ञिरे) उत्पन्न होता है और (तस्मात्) उस परमात्मा से ही (यजुः) यजुर्वेद (अजायतः) उत्पन्न होता है।

तस्मादश्वाऽअजायन्त ये के चोभयादतः।

गावो ह जज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाताऽअजावयः।।8।।

पदार्थ-जीवों की उत्पत्ति का क्रम फिर भी चलता रहता है। (तस्मात्) उसी पर ब्रह्म परमेश्वर से (अश्वाः) घोड़े तथा (ये) जो (के) कोई (च) गदहा आदि (उभयादत) दोनों ओर ऊपर नीचे दातों वाले प्राणी हैं। (अंजायन्त) उत्पन्न हुए हैं। (तस्मात्) उसी पुरुष से (गावः) गौवें (यह एक और दांत वाले पशुओं का उपलक्षण है) आदि (ह) निश्चय करके (जज्ञिरे) उत्पन्न हुए और (तस्मात्) उस परब्रह्म परमात्मा से ही (अजायवः) बकरी, भेड़ आदि (जातः) उत्पन्न हुए हैं इस प्रकार जानना चाहिए।

तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन् पुरूष जातमग्रतः।

तेन देवाऽअजयन्त साध्याऽऋषयश्च ये।।9।।

(शेष पृष्ठ 6 पर)

स्वास्थ्य चर्चा

घरेलू उपचार

अतिसार (खूनी दस्त)-१. वेल गिरी का चूर्ण और गुड़ समभाग खिलाने से अति लाभ होता है।

विधि-वेल गिरी को पीसकर चूर्ण कर लें और गुड़ मिला ले।

२, सूखा आवला १० ग्राम छोटी हरड़ ५ ग्राम दोनों को पीसकर १, २ ग्राम मात्रा में प्रात: सांय ताजा पानी के साथ फांक लें।

३. प्याज पीस कर नाभि पर लेप करें।

४. गूलर की पत्ती पानी मिलाकर पीसकर छान लें।

५. बबूल की पत्ती ताजा घोंट कर दिन में ४ बार पियें।

६. जायफल कपड़े में छान करके पानी के साथ सेवन करें।

७. छोटी हरड़ छाछ या दही के साथ सेवन करें (अनुभूत हैं)।

अपच-१. आम की गुठली का चूर्ण ३ ग्राम जल के साथ सेवन करें।

बच्चों के रोग के लिए-शीत ऋतु में सूखे बेल गूदा, आम की गुठली, हींग का फूला तथा नमक पीसकर चटायें। मात्रा १, १ रत्ती माता के दूध के साथ।

२. अमलतास का गूदा मां के दूध के साथ घोल कर पिलायें।

अजीर्ण (कब्ज)-१. प्रतिदिन नीबू के रस में केशर घोंट कर पिलायें।

२. छोटी हरड़ तीन प्रति दिन चूसें, खुश्की आये तो घी मिला कर दूध पियें।

३. प्रति दिन १५ मुनक्का दूध में डालकर गर्म करें। ठन्डा करके मुनक्का खाकर दूध पियें। (अनुभूत है)

अपच के कारण मुँह में छाले-अपच के कारण बच्चे के मुँह में छाले पड़ गये हों, मुँह से लार टपकती हो बच्चा दूध न पीता हो तो उसे निम्न दवा तैयार करके दें।

सफेद कत्था ५ ग्राम, वंशलोचन ३ ग्राम छोटी इलायची दाना ३ ग्राम, शीतल चीनी ३ ग्राम, आग फूला हुआ तूतिया ३ ग्राम।

बच्चे की उल्टी दस्त-सुहागा फूला कर १ ग्राम शहद के साथ नौसादर का चूर्ण १ ग्राम खाने का सोडा १ ग्राम दिन में ४ बार गर्म पानी से बच्चे को पिलायें।

आँव आना-चित्रक मूल की छाल, पीपला मूल, जबाखार, सज्जी खार, पाँचो नमक त्रिकुटु, हींग का फूला, अजमोद, चव्य का चूर्ण कर नीबू रस में गोली बनाकर ६ ग्राम सिंगजराव ६ ग्राम को पानी के साथ लें।

विधि-इन सबको खूब बारीक पीस कर साफ सुथरी सूखी शीशी में रख लें। दिन में चार बार बच्चे के मुँह में २, २ रत्ती दें (अनुभूत)।

बच्चे की उल्टी, ज्वर, खांसी-काकड़ा सिंगी ५ ग्राम, अतीस (अतिविषा) ५ ग्राम नागर मोथा ५ ग्राम छोटी पीपल ५ ग्राम।

विधि-इन सबको खूब बारीक पीसकर कपड़े में छान लो। साफ शीशी में भर लो। मात्र १ रत्ती शुद्ध शहद में उँगली से चटाये। उल्टी तुरन्त बन्द हो जायेंगी। ज्वर २, ३ दिन में तथा खांसी ५ दिन में दूर हो जायेगी।

अफारा-नीबू के रस में जायफल पीसकर चाटने से दस्त साफ होकर पेट का अफारा मिट जाता है।

अण्डकोश वृद्धि-१. बच और सरसों को पानी में पीस कर गर्म करके सुहाता-सुहाता लेप करें।

२. इन्द्रायण की जड़ को पानी में पीसकर सुहाता-सुहाता लेप करें।

३. कटेरी सत्यानाशी की जड़ का बक्कल काली मिर्च पीसकर लेप करें।

अपस्मार-१. ब्राह्मी का रस ६ ग्राम शहद ५ ग्राम दोनों को मिलाकर रोगी को चटायें।

२. ढाक की जड़ पानी में पीसकर नाक में २, ३ बूँद टपकाने से मिर्गी नष्ट हो जाती है।

अम्ल पित्त-१. हरड़ का चूर्ण शबद या गुड़ के साथ ५ ग्राम की मात्रा में सेवन करें।

२. शहद १० ग्राम नीबू का रस ५ ग्राम मिलाकर चाटें।

३. प्रति दिन १० ग्राम गुड़ चूसें।

४. सफेद चन्दन का चूर्ण शहद के साथ चाटें।

५. अविपत्ति कर चूर्ण ठन्डे जल से लें। दिन में ३ बार मात्रा १ चम्मच।

अर्स ववासीर-१. पीली राल ५० ग्राम लेकर पीस लेवें। प्रति दिन ५ ग्रास चूर्ण १२५ ग्राम दही के साथ लें। १ सप्ताह प्रयोग करें।

२. माल कांगनी, कल्मी शोरा दोनों समभाग लेकर बारीक पीस लें ३ ग्राम चूर्ण ठण्डे जल के साथ लें।

अन्ध गता-१. सफेद प्याज का रस २, २ बूँद प्रात: सांय आँखों में डालें।

२. काली गाय का मूत्र २,२ बूँद प्रात: सांय आँखों में छानकर डालें।

३. छोटी पीपल गौ मूत्र में घिसकर लगायें।

आँख दुखना-१. फिटकरी आधा ग्राम गुलाब जल में डालकर शीशी में रख लें। दिन में २, ३ बार दो-दो बूँद आँखों में डालें (अनुभूत हैं)।

२. देशी मधु मक्खी का शहद काजल की भाँति आँख में लगायें।

३. गोरख मुण्डी के फूल निगल जाये आँख न दुखेंगी।

आंत उतरना-१. अरण्ड की जड़ की छाल और सोंठ का सुहाता-सुहाता लेप करें।

आग से जलना-१. नारियल का तेल जले स्थान पर लगायें।

२. जले स्थान पर शहद का लेप करें।

आधा शीशी-१. प्रात: घी की गर्म-गर्म जलेबी खाओ ऊपर से दूध पियें।

२. सूर्योदय से पहले काली स्याही आँखों में लगाओ।

३. तुलसी के पत्तों का चूर्ण शहद के साथ प्रात: सांय चाटें।

आमाशय रोग-हींग, नौसादर, सेंधा नमक समभाग लेकर ५०० ग्राम पानी में मिलाकर बोतल में भरो मात्रा २५ ग्राम प्रात: सांय पिलाइये।

नोट-यह योग दर्द गुर्दा, तिल्ली, जिगर, वायु गोला, अपच आदि रोगों की रामबाण औषधि है।

उदर पीड़ा-१. काली मिर्च ५ ग्राम, २०० ग्राम दूध में गर्म करके पियें।

२. अमर बेल के बीज पानी में गर्म करके लेप करें।

उदर कृमि-१. कच्ची गाजर खाने से कृमि मर जाते हैं।

२. पके टमाटर का रस पियो।

३. अण्डी के पत्तों का रस गुदा में कर दें।

४. पीपला मूल १० ग्राम मिश्री ५ ग्राम मिलाकर जल से प्रयोग करें।

अम्ल पित्त-काली मिर्च, नमक सेंधा, सोंठ, शक्कर समभाग १०, १० ग्राम लेकर कूट पीस छानकर नीबू के रस में मिलाकर खायें या नींबू में बुर्ककर गर्म करके चूसें।

अग्नि मान्ध-अदरक कूट पीस कर रस निकाल कर शहद में मिलाकर चाटें।

उपदेश-कनेर की जड़ पीसकर पानी में गाढ़ा-गाढ़ा लेप करें।

उल्टी दांत-नीबू पर नमक और काली मिर्च लगाकर गर्म करके चूसें।

इच्छानुसार विरेचन-सनाय, मुनक्का तथा गुलाब के फूल समभाग लेकर पीसकर गोली बनालो। एक गोली दूध के साथ सेवन करो।

आव खूनी-(१) टट्टी में खून आना पोस्त, हर्र, सोंठ तीनों के बराबर सौंफ, हर्र, घी में भून लें मिलाके लो मात्रा ३ ग्राम ठन्डे जल के साथ।

(२) नीबू के पत्तों का रस १० ग्राम शहद समभाग मिलाकर १५ दिन पिलायें।

(३) बड़ी हरड़ का चूर्ण गुनगुने पानी के साथ सोते समय प्रयोग करें।

उपदेश-(आतिश) (१) सत्यानाशी कटेरी की जड़ का छिलका १० ग्राम काली मिर्च ५ ग्राम घोंट कर पियें। १ सप्ताह में रोग जाता रहेगा।

(२) कनेर की जड़ पीस कर ले करें (अनुभूत हैं)।

अधिक थूक आना-२ तोले पोस्त २ तोले वबूल की छाल को ५०० ग्राम पानी में गर्म करके कुल्ला करें।

[अनेक रोगों की एक दवा]

१ धतूरे की कोंपल, आम की कोंपल तथा अरण्ड की कोंपल समभाग लेकर पीसकर गोली मटर के बराबर बना लो २ गोली गर्म जल के साथ सेवन करिये।

गठिया, जोड़ों का दर्द, कब्ज आदि में रामबाण है।

उदर रोग-(१) छोटी दुद्धी गाय के बच्चे दूध में पीस कर पियें दस्त बन्द होंगे दर्द नहीं होगा।

(२) बबूल की पत्ती पानी में पीसकर पिलायें।

(३) तुलसी और अदरक का रस गर्म करके पिलायें उदर पीड़ा में लाभप्रद है। (क्रमश:)

पृष्ठ 4 का शेष-यजुर्वेद में पुरूष सुक्त

पदार्थ-उत्पत्ति का क्रम आगे इस प्रकार चलता है। (ये) जो (देवा:) विद्वान् (च) और (साध्या:) साधना करने वाले साधक लोग (ऋषय:) मन्त्रार्थ जानने वाले ज्ञानी लोग जिस (अग्रत:) सृष्टि से पूर्व (जातम्) प्रसिद्ध हुए (यज्ञम्) सम्यक् पूजने योग्य (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा को (बर्हिषि) मानस ज्ञान यज्ञ में (प्रओक्षन्) धारण करते हैं वे ही (तेन) उसके उपदेश किये हुए वेद से (अजयन्त) उसको पूजते हैं। परमेश्वर के विराट् रूप से सम्बन्धित अगले दो मन्त्र हैं।

यत्पुरूषं व्यदधु: कतिधा व्यकल्पयन्।

मुखं किमस्यासीत्किं बाहू किमरू पादाऽउच्येते।।10।।

पदार्थ-विद्वान लोग परमात्मा के स्वरूप को विविध प्रकार से वर्णन करते हैं। एक जिज्ञासु उनसे प्रश्न करता है कि आप (यत्) जिस (पुरूषम्) पूर्ण परमेश्वर को (वि अदधु:) विविध प्रकार से धारण करते हो उसको (कतिधा) कितने प्रकार से (विअकल्पयन्) विशेष कर बताते हो और (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (मुखम्) मुख के समान श्रेष्ठ (किम्) कौन (आसीत) है। (बाहू) भुजबल का धारक (किम्) कौन (ऊरू) जांघों के समान कार्य करने वाला और (पादौ) पांव के समान (किम्) कौन (उच्येते) कहे जाते है।

पाठक इस मन्त्र पर ध्यान दें यहां यह प्रश्न किया गया है कि सम्पूर्ण सृष्टि को एक मनुष्याकार मान लें तो उसका मुख, बाहू, ऊरू और पांवो का निर्माण किसके द्वारा होगा। मन्त्र में यह नहीं पूछा गया कि ईश्वर के किस अङ्ग से कौन उत्पन्न हुआ। यह प्रश्न इस प्रकार पूछा भी नहीं जा सकता था क्योंकि ईश्वर तो निराकार है। अगले मन्त्र में इन प्रश्नों का समुचित उत्तर दिया गया है।

ब्रह्मणोऽअस्य मुखमासीदबाहू राजन्य: कृत:।

ऊरू तदस्य यद्वैश्य: पदभ्याꣳशूद्रोऽअजायत्।।11।।

पदार्थ-पद का अर्थ करते समय ऊपर किये गये प्रश्नों का ध्यान रखें। (अस्य) इस ईश्वर की सृष्टि में (ब्राह्मण:) ब्राह्मण मुख के समान (आसीत्) है। (बाहू:) भुजाएँ (राजन्य:) क्षत्रिय (कृत:) द्वारा बनती है अर्थात् क्षत्रिय सृष्टि में बाहू के समान है। (यत्) जो (ऊरू) जाघों के समान (तत्) वह (अस्य) इसका (वैशष्य:) वैश्य है। (पदभ्याम्) पैरों के समान (शूद्र) शूद्र (अजायत) होता है। यहां उत्तर प्रश्न के अनुरूप ही दिया गया है। इस तरह यह धारणा कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र क्रमश: ब्रह्म के मुख, बाहू, जांघ अथवा पैर से उत्पन्न हुए है मिथ्या है।

अगले मन्त्र में फिर सृष्टि उत्पत्ति के क्रम का वर्णन प्रारम्भ हो गया है।

चन्द्रमा मनसोजातश्चक्षो: सूर्यो अजायत।

श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्नि जायत:।।12।।

पदार्थ-इस पूर्ण ब्रह्म के (मनस:) ज्ञान स्वरूप सामर्थ्य से (चन्द्रमा) चन्द्रलोक (जात:) उत्पन्न हुआ (चक्षो:) ज्योति स्वरूप सामर्थ्य से (सूर्य्य:) सूर्य मण्डल (अजायत) उत्पन्न हुआ (श्रोत्रान्) श्रोत्र नाम अवकाश रूप सामर्थ्य से (वायु:) वायु (च) तथा आकाश प्रदेश (च) और (प्राण:) जीवन के निमित्त दस प्राण और (मुखात्) मुख्य ज्योतिर्मय भक्षणरूप सामर्थ्य से (अग्नि:) अग्नि (अजायत:) उत्पन्न हुआ।

इसी प्रकार अगले मन्त्र में अन्तरिक्ष, द्यौ, भूमि आदि के उत्पन्न होने का वर्णन है।

सृष्टि उत्पत्ति के विषय को इसी स्थल पर विराम देकर अगले तीन मन्त्रों में यज्ञ के विषय में सामान्य वर्णन है। हम यहां केवल दो मन्त्र दे रहे हैं।

यत् पुरूषेण हविषा देवा यज्ञमतन्वत।

बसन्तोऽस्यासीदाज्यं ग्रीष्मऽ-इध्म: शरद्धवि:।।14।।

पदार्थ-(यत्) जब (हविषा) ग्रहण करने योग्य (पुरूषेण) पूर्ण परमात्मा के साथ (देवा:) विद्वान लोग (यज्ञम्) मानस ज्ञान यज्ञ को (अतन्वत) विस्तृत करते हैं। (अस्य) इस यज्ञ के (बसन्त:) वसन्त पूर्वाहण काल ही (आज्यम्) घी (ग्रीष्म:) ग्रीष्म मध्यान काल (इध्म:) इन्धन और (शरत्) शरद रात्रि काल (हवि:) होमने योग्य पदार्थ (आसीत्) है।

यज्ञेनयज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।

ते ह नाकं महिमान: सचन्त यत्र पूर्वे साध्या: सन्ति देवा:।।16।।

पदार्थ-जो (देवा:) विद्वान् लोग (यज्ञेन) ज्ञान यज्ञ से (यज्ञम्) अग्निवत् तेजस्वी ईश्वर की (अयजन्त तानि) पूजा करते हैं। (तानि) वे ईश्वर की पूजा आदि (धर्माणि) धारणा रूप धर्म (प्रथमानि) अनादि रूप से मुख्य (आसन्) हैं। (ते) वे विद्वान् (महिमान:) महत्व से युक्त हुए (यत्र) जिस सुख में (पूर्वे) इस समय से पूर्व हुए (साध्या:) साधनों को किये हुए (देव:) विद्वान (सन्ति) है उस (नाकम्) दुख रहित मुक्ति को (ह) ही (सचन्त) प्राप्त होते हैं। अगले मन्त्र में बतलाया गया है कि कारण को कार्य में परिवर्तित कर परमात्मा सृष्टि को उत्पन्न करता है।

फिर अगला मन्त्र बड़ा महत्वपूर्ण है उसमें मुक्ति का मार्ग बतलाया गया है।

वेदाहमेतं पुरूषम् महान्तमा-दित्यवर्णं तमस: परस्तात।

तमेव विदित्वाति मृत्युमेतिनान्य: पन्थाविद्यते अयनाय।।18।।

पदर्थ-(अहम्) मैं (एतम्) जिस पूर्वोक्त्त (महान्तम्) बड़े बड़े गुणों से युक्त (आदित्यवर्ण) सूर्य के समान प्रकाशमान (तमस:) अज्ञान और अन्धकार से (परस्तात्) पृथक् वर्तमान (पुरूषम्) पूर्ण परमात्मा को (वेद) जानता हूँ। (तम्,एव) उसी को (विदित्वा) जान कर हम (मृत्युम्) मृत्यु को (अति एति) उल्लंघन कर जाते है किन्तु (अन्य:) इससे भिन्न (पन्था:) मार्ग (अयनाय) मोक्ष के लिए (न विद्यते) नहीं विद्यमान है।

भावार्थ-परब्रह्म परमात्मा के स्वरूप को जान कर मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

फिर वह ब्रह्म कैसा है। इस विषय का वर्णन अगला मन्त्र करता है।

प्रजापतिश्चरति गर्भेऽअन्तर-जायमानो बहुधा वि जायते।

तस्य योनिं परि पश्यन्ति धीरास्तस्मिन्ह तस्थुर्भुवनानि विश्वा।।19।।

पदार्थ-जो यह सर्वरक्षक आप उत्पन्न न होता हुआ अपने सामर्थ्य से जगत् को उत्पन्न कर और उसमें प्रविष्ट होकर सर्वत्र विचरता है। जिस अनेक प्रकार से प्रसिद्ध ईश्वर को विद्वान लोग ही जानते हैं। उस जगत् के आधार रूप सर्वव्यापक परमात्मा को जान कर मनुष्यों को आनन्द भोगना चाहिए।

अगले मन्त्र में संसार के रचयिता परमात्मा की उपासना करने को कहा गया है। उसी ने हमें जीवित रहने के सभी साधन उपलब्ध किये हैं। अब विद्वानों को ब्रह्म को जानकर क्या करना चाहिए। इसका वर्णन इस मन्त्र में हैं।

रूचं ब्रह्मं जनयन्तो देवाऽअग्रे तदब्रुवन।

यस्त्वैवं ब्राह्मणो विद्यात्तस्य देवाऽअसन्वशे।।21।।

पदार्थ-हे ब्रह्म निष्ठ पुरूष। जो (रूचम्) रूचिकारक (ब्राह्म) ब्रह्म के उपासक (त्वा) आपको (जनयन्त:) सम्पन्न करते हुए (देव:) विद्वान् लोग (अग्रे) पहिले (तत्) ब्रह्म, जीव और प्रकृति के स्वरूप को (अब्रुवन) कहें (य:) जो (ब्राह्मण:) ब्राह्मण (एवम्) ऐसे (विद्यात्) जाने (तस्य) उसके वे (देवा:) विद्वान् (वशे) वंश में (असन्) हों।

भावार्थ-विद्वानों का यह मुख्य कर्तव्य है कि वे समाज की रूचि वेद, ईश्वर और सदाचार की तरफ मोड़ें। अब अन्त में एक बार फिर ईश्वर के स्वरूप को अगले अन्तिम मन्त्र में बतलाया गया है।

श्रीक्ष्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे नक्षत्राणि रूपमश्विनौ व्यात्तम्।

इष्णान्नषाणामुं मऽइषाण सर्व लोकंऽइषाण।।22।।

पदार्थ-हे जगदीश्वर। जिस (ते) आपकी (श्री:) समग्र शोभा (च) और (लक्ष्मी:) सर्व ऐश्वर्य (च) भी (पत्न्यौ) दो स्त्रियों के समान (अहो रात्रे) दिन रात (पार्श्वे) आगे पीछे आपकी सृष्टि में (अश्विनौ) सूर्य, चन्द्रमा (व्यात्तम्) फैले मुख के समान (नक्षत्राणि) नक्षत्र (रूपम्) रूप वाले हैं सो आप (मे) मेरे लिए (अमुम्) परोक्ष सुख को (इष्णन्) चाहते हुए (इषाणा) चाहना कीजिए। (मे) मेरे लिए (सर्वलोकम्) सब के दर्शन को (इषाण) प्राप्त कीजिऐ। (मे) मेरे लिए सब सुखों को (इषाण) पहुँचाइये।

इस प्रकार पुरूष सूक्त में परमात्मा के स्वरूप, सृष्टि की उत्पत्ति और मोक्ष प्राप्ति के साधन को बता दिया गया है।

पृष्ठ 2 का शेष-हम भी दोषी हैं

सच्चे मार्ग को मिटाते हैं।

जितने कथित गुरु बढ़ रहे हैं, समाज में उतनी फूट व अनेकता भी बढ़ रही हैं, परिवार भी बिखर रहे हैं क्योंकि सब की मान्यताएं पृथक्-पृथक् हैं। इस सम्बन्ध में विष्णु लाल पण्डया को लिखा महर्षि दयानन्द का एक पत्र उपलब्ध है, जिसमें उन्होंने लिखा था-जब तक देश में एक उपास्य देव, एक उपासना पद्धति, एक ग्रन्थ व एक भाषा न होगी, तब तक राष्ट्रीय एकता न होगी।'' पहले की तरह आर्य समाज को पूर्व वर्णित अपने कार्य फिर से चलाने होंगे।

राम रहीम हो, रामपाल हो या कोई अन्य बाबा, ये सब राजनैतिक दलों द्वारा पालित व पोषित हैं। रामपाल कांग्रेस के शासन काल में अपना कारोबार फैलाता रहा। कांग्रेस के बड़े शासक की धर्मपत्नी रामपाल के न्यास की एक महत्वपूर्ण सदस्य थी व कई उच्चाधिकारी रामपाल के सहायक थे। भोग-विलास की खुली छूट जहाँ होगी, व्यवस्था होगी, वहाँ अनेक नेता व उच्चाधिकारी जाते ही हैं। छत्रपति रामचन्द्र पर हमला इनैलो के शासन काल में हुआ था। छत्रपति राम चन्द्र ने राम रहीम के दुष्कर्मों की पोल अपने पत्र में जब खोली थी तो उस कलम के सिपाही का ठीक प्रकार से उपचार नहीं होने दिया गया। वह आर्यवीर यह कहता कहता ही चला गया कि मेरे बयान तो करा लो। राम रहीम तो कांग्रेस, इनैलो तथा भारतीय जनता पार्टी-इन तीनों का पूज्य गुरु रहा है। सब दलों के नेता उसके चरणों में उपस्थित होकर वोटों का प्रसाद मांगते रहे हैं। इनकी जानकारी में बहुत कुछ था परन्तु इन्होंने उसके विरुद्ध कोई कार्यवाही नहीं की। कार्यवाही करना तो दूर की बात है, राजनेता तो उसके डेरे पर मत्था टेकते ताकि वोटों का प्रसाद मिलता रहे। वोट का भिखारी सच्चाई का पुजारी हो ही नहीं सकता। चाहे वह किसी भी दल का क्यों न हो। जो दण्ड राम रहीम बाबा को मिला है, इसका श्रेय तो उन दो 'अज्ञात' महिलाओं का दिया जाना चाहिए जिनके साथ बाबा ने दुराचार किया था। आर्यवीर जगदीप सिंह न्यायाधीश जी का धन्यवाद करना चाहिए जिन्होंने दूध का दूध और पानी का पानी कर दिया है।

आर्य समाज ने रामपाल प्रकरण में पाँच आर्यों के बलिदान दिए हैं, जो प्रेरक एवं प्रशंसनीय हैं। रामपाल आज जेल में है तो उसका श्रेय आर्य समाज को है परन्तु विषय की गहराई में जाएं व यह भी निष्कर्ष निकालें कि स्वरूप पठित या अपठित लोग ऐसे बाबाओं की शरण में क्यों जाते हैं ? इस निबन्ध के प्रारम्भ में इस विषय में लिखा जा चुका है। मूल कारण अविद्या का नाश न करना और विद्या का प्रचार उचित मात्रा में व साधारण लोगों के बीच में न करना है। इसके अभाव में पिछड़े वर्गों के लोग ऐसे बाबाओं की शरण में जाते रहेंगे व नित्य नये-नये बाबे प्रकट होते रहेंगे।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

शोक समाचार

अति दुखी हृदय से सूचित किया जा रहा है कि श्री मति कुसम लता महाजन धर्म-पत्नी श्री राज कुमार महाजन पठानकोट का निधन 26-9-2018 दिन बुधवार को सुबह 3.30 बजे बत्तरा हस्पताल नई दिल्ली में हो गया था। उनका अत्येष्टि संस्कार 27-9-2018 को पूर्ण वैदिक रिति से वैदिक मन्त्रोच्चारण द्वारा पठानकोट में हुआ। रसम चौथा उठाला 28-9-2018 को महाजन हाल ढांगू रोड पठानकोट में किया गया। संस्कार एवं रसम उठाला में भारी संख्या में सम्बन्धी गण मित्र गण, आर्य संस्था के आर्यजन, अन्य सामाजिक धार्मिक एवं राजनैतिक नेताओं ने इस पावन पवित्र दिव्य, दिवंगत पुण्य आत्मा के प्रति अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किये। प्रभु से प्रार्थना है कि इस दिवंगत आत्मा को अपने चरणों में स्थान दे। श्री राज कुमार महाजन बचपन से ही आर्य समाजी हैं। एक उच्चकोटि के आर्य समाजी हैं। इनके दादा श्री परस राम जी ने स्वामी दयानन्द के साथ संगत की है और स्वामी दयानन्द जी के अति निकटतम थे। इनके पिता मा. नन्द लाल जी महाजन ने अपना पूरा जीवन आर्य समाज की सेवा में गुजारा। आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के कई वर्षों तक महामन्त्री के पद पर रहे हैं।

अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र का आयोजन

सर्वकल्याण धर्मार्थ न्यास (पंजी.) पानीपत, हरियाणा द्वारा आयोजित ''अद्भूत अग्निहोत्र प्रशिक्षण केन्द्र'' का शुभारम्भ स्मृतिशेष पूज्य आचार्य श्री ज्ञानेश्वर जी, रोजड़, गुजरात की प्रेरणा व निर्देशन में माननीय कैप्टन श्री अभिमन्यु जी, वित मंत्री, हरियाणा सरकार के सानिध्य में 1.10.2017 को गांव बसई (गुरुग्राम) हरियाणा में हुआ। इस अवसर पर मंत्री महोदय ने 5 लाख का आर्थिक सहयोग प्रदान कर ज्योति प्रज्ज्वलित की। दिनांक 1.10.2017 से 30.9. 2018 तक सूर्योदय से सूर्यास्त तक प्रतिदिन 12 घण्टे लगातार, 365 दिन तक यह आयोजन चलता रहा। प्रभु की असीम कृपा एवं सहाय से तथा यज्ञ प्रेमी महानुभावों के सहयोग व आशीर्वाद से निरन्तर चलता रहा। दिनांक 30.9.2018 को समापन समारोह की अध्यक्षता आदरणीय महामहिम **डॉ. देवव्रत आचार्य जी, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश** ने की और अपने सारगर्भित उद्बोधन से श्रोताओं का मार्गदर्शन कर पर्यावरण की रक्षा हेतु यज्ञ की महत्ता का विस्तृत वर्णन किया और न्यास को 2 लाख रुपये का आर्थिक सहयोग करने की घोषणा भी की। इस अवसर पर अपना आशीर्वाद देने माननीय मुख्य अतिथि रूप में पधारे डॉ. सत्यपाल सिंह आर्य, मंत्री भारत सरकार ने यज्ञ की विशेषताओं पर विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किया। विशिष्ठ अतिथि श्री सुरेश चन्द्र जी आर्य, प्रधान, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली, श्री सुरेन्द्र आर्य जी, चेयरमैन, जे. बी. एम. ग्रुप, डॉ. विनय विद्यालंकार, प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, उत्तराखण्ड, आचार्य श्री सत्यजित ज एवं आचार्य श्री संदीप जी रोजड़ गुजरात, आदि-आदि ने भी समापन समारोह में पधार कर यज्ञ व पर्यावरण के विषय में जानकारी दी व न्यास की भूरि-भूरि प्रशंसा भी की और अपने सहयोग का आश्वासन भी दिया। डॉ. विनय विद्यालंकार ने मंच का सफल संचालन कर समारोह को सम्पन्न करवाया। श्री सुरेश चन्द्र आर्य जी, प्रधान ने 1 लाख 51 हजार रुपये का दान दिया।

रुचं नो धेहि ब्राह्मणेषु रुचꣳराजसु नस्कृधि।
रुचं विश्येषु शूद्रेषु मयि धेहि रुचा रुचम्।।

-यजु० १८.४८

भावार्थ-हे विशाल प्रेम ज्ञान और तेज के भण्डार परमात्मन्! हमारे ब्राह्मणादि चारों वर्णों को वेदों के स्वाध्याय और योगाभ्यासादि साधनों से उत्पन्न जो ब्रह्मतेज उस तेज से सम्पन्न करो। इन चारों वर्णों में आपस में प्रेम भी उत्पन्न करो, जिससे एक दूसरे के सहायक बनते हुए सब सुखी हों। वेदादि सत्य शास्त्रों की विद्या और परस्पर प्रेम के बिना, कभी कोई सुखी नहीं हो सकता। इसीलिए आप दयालु पिता ने इस मन्त्र द्वारा, हमें बताया कि मेरे प्यारे पुत्रो! तुम लोग मुझसे ब्रह्मविद्या और परस्पर प्रेम की प्रार्थना करो, जिससे आप लोग सदा सुखी होओ।

प्रस्थानत्रयी और त्रैतवाद

ले०-श्री अमर स्वामी जी शास्त्रार्थ महारथी

त्रैतवाद, जीव, प्रकृति तीनों, पृथक् 2 पदार्थ हैं और तीनों अनादि हैं यह वैदिक सिद्धान्त है। ऋषि दयानन्द जी महाराज ने प्रबल युक्तियों और प्रमाणों से इस सिद्धान्त का प्रतिपादन किया है। इस सिद्धान्त का ऋषि दयानन्द जी महाराज ने ऐसे समय में प्रबल प्रचार किया। जिस समय में लाखों संन्यासी अद्वैतवाद का सर्वत्र प्रचार करते थे और प्रायः सभी संस्कृतज्ञ पण्डित शंकराचार्य जी के अद्वैतवाद को नतमस्तक होकर स्वीकार कर चुके थे। अद्वैतवादियों ने अपने अद्वैतवाद का नाम वेदान्त रख लिया था और यह घोषणा कर रखी थी कि-

श्लोकार्धेन प्रवक्ष्यामि, यदुक्तं ग्रन्थ कोटिभिः
ब्रह्मसत्य जगन्मिथ्या, जीवो ब्रह्म व नापरः।

अर्थात् मैं आधे श्लोक द्वारा यह कहता हूं जो करोड़ों ग्रन्थों द्वारा कही गई है वह यह कि ब्रह्म सत्य है जगत् मिथ्या है ईश्वर और जीव पृथक् 2 नहीं, एक ही हैं।

साथ ही अद्वैतवादी कहते हैं कि अन्य शास्त्र रूपी गीदड़ तब तक ही वन में गर्जते हैं जब तक वेदान्त केसरी नहीं गर्जता है। वेदान्त केसरी के गर्जते ही सारे पूंछ दबा कर भाग जाते हैं।

ऋषि दयानन्द जी ने जब त्रैतवाद की घोषणा की और गर्ज कर कहा कि ईश्वर, जीव, प्रकृति ये तीनों पदार्थ अपनी पृथक् 2. सत्ता रखने वाले तीन अनादि पदार्थ हैं, तब उनके सामने कोई अद्वैतवादी न जम सका।

शंकराचार्य जी ने अद्वैतवाद रूप नया मत बनाया था जिस को अब वेदान्त कहा जाता और अद्वैतवादियों को वेदान्ती कहा जाने लगा, ऋषि दयानन्द जी ने उनको नवीन वेदान्ती कहा।

कहा जाता है कि शंकराचार्य जी के इस मत का आधार प्रस्थानत्रयी है। प्रस्थानत्रयी उपनिषद, वेदान्त दर्शन और गीता को कहा जाता है। निश्चय ही है कि शंकराचार्य जी ने किसी वेद का भाष्य नहीं किया। ग्यारह उपनिषदों पर उनका भाष्य है। वह हैं 1. ईश. 2. केन 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य 7. ऐतरेय, 8. तैत्तिरीय, 9. छान्दोग्य, 10. बृहदारण्यक, 11. श्वेताश्वर इन उपनिषदों का भाष्य शंकराचार्य जी ने ऐसा किया जिससे उनके अद्वैतमत का पोषण हो। ऐसा ही भाष्य उन्होंने वेदान्त दर्शन का किया और ऐसा ही गीत का।

पौराणिक संन्यासी मण्डल इन्हीं ग्रन्थों को पढ़ता और इन्हीं के प्रमाण शंकराचार्य जी द्वारा बनाए भाष्य के साथ देता रहा।

ऋषि दयानन्द जी महाराज ने हम को वेदों द्वारा दिव्य दृष्टि दी उससे हमने उन ग्रन्थों के मूल वाक्यों को पढ़ा तो पता लगा कि शंकराचार्य जी का अर्थ न केवल वेद विरुद्ध ही है, अपितु मूल वाक्यों से दूर बनावटी अर्थ है। 11 उपनिषद् वेदान्त दर्शन और गीता तीनों में त्रैतवाद है अद्वैतवाद नहीं।

मैंने इस विषय पर एक पुस्तक लिखी हुई है सम्भव है कभी छप जाए। इस समय मैं प्रस्थानत्रयी में से थोड़े से प्रमाण यहां लिखता हूं पाठक पढ़ें और विचार करें।

1. श्वेताश्वर उपनिषद् (4-5) से है।

अजामेकाम् लोहितां शुक्ल कृष्णाम् बहवीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।
अजो ह्यको जुषमाणोऽनुशेते, जहासेनां भुक्तभोगामजोऽन्यः।

सत्व, रज, तम तीन गुणों से एक प्रजा है अजा-प्रकृति जो अनादि जिस का जन्म कभी नहीं हुआ। एक अज-अनादि अनुत्पन्न जीव है जो उसका सेवन करता है, दूसरा अज-अजन्मा परमेश्वर है जो उस प्रकृति के भोगों को कभी नहीं भोगता है।

इस उपनिषद् वचन में ईश्वर जीव और प्रकृति तीन कहे हैं और तीनों को अनादि बताया है।

(2) द्वासुपर्णा सयुजा सखाया समानं वृक्ष परिषस्वजाते।
तयोरन्यः पिपलं स्वादवत्यनश्नन्नन्यो अभिचाकशीति।

वह मन्त्र वेद का है पर उपनिषद् में भी आया है इसमें कहा है कि चेतन सत्ताएं अनादि हैं ईश्वर और जीव, एक ऐसा ही अनादि वृक्ष हैं 'प्रकृति एक चेतन सत्ता जीव उस प्रकृति के फलों को भोगने याला है दूसरी चेतन सता परमात्मा है वह इसके फलों को नहीं भोगता है केवल शासन करता है। यह मन्त्र उपनिषद् में आया है इसीलिए यहां दिया है।'

(3) यथोर्णनाभि सृजते गृह्णते च, मुण्डक उपनिषद् (1-1-7)

इसमें कहा है कि मकड़ी जैसे अपने अन्दर से ही जाला निकाल 2 कर फैलाती है और कभी कभी अपने अन्दर ही समेट लेती है वैसे ही परमेश्वर अपने अन्दर से ही सारी सृष्टि को बनाते और अपने अन्दर ही समेट लेते हैं। इस प्रमाण को अद्वैतवादी लोग ईश्वर को अभिन्न निमित्तोपादान सिद्ध करने के लिए देते हैं और कहते हैं कि एक ब्रह्म ही ब्रह्म है और दूसरा कुछ नहीं है, न जीव है न प्रकृति।

यह उपनिषद् वचन उनके पक्ष का पोषक नहीं है। इसमें मकड़ी का उदाहरण है। मकड़ी का पार्थिव शरीर है उस में चेतन जीव है। मकड़ी प्राकृतिक शरीर में से प्राकृतिक जाला निकालती है। जाला मकड़ी के जीव में से नहीं निकलता है। शरीर में से निकलता है। मकड़ी में प्राकृति और जीव दो हैं। तीसरा इनका सयोग और वियोग कराने वाला परमात्मा है। इसमें तीन हैं। मेरी पुस्तक में उपनिषदों के भी बहुत प्रमाण हैं।

वेदान्त दर्शन में-

गुहा प्रविष्टावात्मानौ हि तद्-दर्शनात् 1-2-11

हृदय गृहा में दो आत्मा प्रविष्ट हैं। एक जीव दूसरा ब्रह्म। वेदान्त दर्शन के भी बहुत से सूत्र मैंने अपनी पुस्तक में दिए हैं। यहां एक ही देता हूं।

गीता में त्रैतवाद

प्रकृतिं पुरुषं चैव विद्व्यनादी उभावपि। गीता 13-19 प्रकृति और पुरुष दोनों को अनादि जानो।

गीता-अ. 15 श्लोक 16 और 17
द्वाविमौ पुरुषौ लोके क्षरश्चाक्षर एव च।
क्षरः सर्वाणि भूतानि कूटस्थोऽक्षरं उच्यते।
उत्तमः पुरुषस्त्वन्यः परमात्मेत्यु- दाहृत।
यो लोकत्रयमाविश्य, विभर्त्यव्यय ईश्वरः।।

यहां ईश्वर जीव प्रकृति तीनों को पुरुष नाम से ग्रहण किया है-दो पुरुष तो लोक में प्रकृति और जीव हैं तीसरा उत्तम है इससे वह परमात्मा है। वह अविनाशी तीनों लोकों में प्रविष्ट होकर सबका भरण पोषण करता है।

प्रस्थानत्रय-उपनिषद् वेदान्त दर्शन और गीता के बहुत पुष्ट प्रमाणों से युक्त मैंने पुस्तक लिखी है और लगभग 40 वर्षों से मैंने यह घोषणा कर रखी है कि शकराचार्य जी का और उनके अनुयायियों का अद्वैतवाद वेद विरुद्ध तो है ही प्रस्थानत्रयी के भी विरुद्ध है। हमारा त्रैतवाद पर्वथा वेदानुकुल और युक्तियुक्त तो है ही उन ग्रन्थों से भी प्रमाणित है जिनका सहारा नवीन वेदान्त अद्वैतवाद ने लिया हुआ है।

वेदवाणी

राजा वरुण सब-कुछ जानता है

यस्तिष्ठति चरति यश्च वञ्चति यो निलायं चरति यः प्रतङ्कम्।
द्वौ सन्निषद्य यन्मन्त्रयेते राजा तद् वेद वरुणस्तृतीयः।।

-अथर्व० ४।१६।२

ऋषि-**ब्रह्मा**।। देवता-**वरुणः**।। छन्दः-**त्रिष्टुप्**।।

विनय-पाप से वास्तव में डरने वाले मनुष्य संसार में विरले ही होते हैं। प्रायः लोग पाप करने से नहीं डरते, किन्तु पापी समझे जाने से डरते हैं। जहाँ कोई देखने वाला न हो वहाँ अपने कर्त्तव्य से विमुख हो जाना, कोई पाप कर लेना, साधारण बात है। पाप व अपराध-कर्म से बचने की कोई कोशिश नहीं करता; कोशिश तो इस बात की होती है कि हम वैसा करते हुए कहीं पकड़े न जाएं। यही कारण है कि मनुष्य अपने बहुत-से कार्य छिपकर अकेले में करने को प्रवृत्त होता है, परन्तु यदि उसे इस संसार के सच्चे, एकमात्र राजा वरुणदेव की जानकारी हो तो वह ऐसे घोर अज्ञान में न रहे। यदि उसे मालूम हो कि वे जगत् के ईश्वर वरुण भगवान् सर्वव्यापक और सर्वद्रष्टा हैं तो वह पाप के आचरण करने से डरने लगे, वह एकान्त में भी कभी पाप में प्रवृत्त न हो सके। यदि हम समझते हैं कि हम कोई काम गुप्त रूप में कर सकते हैं तो सचमुच हम बड़े धोखे में हैं। उस सर्वद्रष्टा, सर्वव्यापक वरुण से तो कुछ भी छिपाकर करना असम्भव है। जब हम दो आदमी कोई गुप्त मन्त्रणा करने के लिए किसी अंधेरी-से-अंधेरी कोठड़ी में जाकर बैठते हैं और सलाहें करने लगते हैं तो यद्यपि हम समझ रहे होते हैं कि हम दोनों के सिवाय संसार में और कोई इन बातों को नहीं जानता, तथापि इन सब बातों को वह वरुण देव वहीं तीसरा होकर बैठा हुआ सुन रहा होता है। यदि हम वहां से उठकर किसी किले में जा बैठें, या किसी सर्वथा निर्जन, वन में पहुँच जाएं तो वहां पर भी वह वरुणदेव तो तीसरा साक्षी होकर पहले से बैठा हुआ होता है। उससे छिपाकर हम कुछ नहीं कर सकते। यदि हम दूसरे किसी आदमी को भी कुछ नहीं बताते, केवल अपने ही मन में कुछ सोचते हैं, तो वह वरुण उसे भी जानता है, सब सुनता है। हमारे चलने या ठहरने को, हमारी छोटी-से-छोटी चेष्टा को वह जानता है। जब हम दूसरों को धोखा देते हैं, ठग लेते हैं और समझते हैं कि इसका किसी को पता नहीं लगा, तब हम स्वयं कितने भारी धोखे में होते हैं! क्योंकि, उस वरुण को तो सब-कुछ पता होता है और हमें उसका फल भोगना पड़ता है।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। **E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org**
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।